

अहादीसे नअवी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)
की रोशनीमें

झितनों की भरशात

और

ईश से ब्याव

झिताल भीलने का पता :

अहले हदीस मश्जुद

बुहार शेरी, सगरामपूरा, सुरत

जून-२०१०

Fitrana ki aur Barsat
or usse baahar

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

झितना अरबी का लफ्ज है और बुगत (शब्दकोश) में ईसका भाअना सोने को आग पर तपा कर देभा जाये कि वह भरा है या भोटा चूंकि ईस काम का मकसद सोने की जाँच होता है ईसलीये हर आगमाईश को झितना कह दिया जाता है, जब कोई बुरा काम ठमाने का ईशान जन जाये तो वह भी अेक झितना है क्योकि ये ईसान की आगमाईश का भौका है कि वोह ईशान के आगे हथियार डालता है या उस बुराई से अपने आपको महकुम रभता है. जब कोई गलत सोच (विचार,) नगर का घोभा दलीलो का मुलम्मा चटाकर समाज मे झैलती है तो वहभी अेक झितना है ईसलीये कि ईसमे ईसान की जडी आगमाईश है तो वह ईससे धभराकर सच को छोड भैठता है या गुमराही की तह तक पहुँचकर उसका मुकाबला करता है. जब मुसलमानों में रंगो-नस्ल की बुनियाद पर आपस में पून भराभा शुरु हो जाये तो ये भी जबरदस्त झितना है. ईस आगमाईश की घडी में उस ईसान को चाहिये कि वोह अपनी नस्ल, अपनी बुजान भोलनेवालो और अपने संभंधी का साथ दे या हक को मजबूती से थाभकर अपने

सही रास्ते पर ऽटा रहे. जब मुसलमानो के किसी भी दौ गिरोह में धिप्ललाहु (विरोध) हो और लडाई म्गडे की नौअत आ जाये और मामला धतना संगीन हो जाये कि हक व नाहक का पता चलना मुश्किल हो जाये तो ये सभसे ऽडा इतना है जिसे कुछ हदीसों में अंधे ऽहरे इतनो का हवाला दिया गया है. क्योकि यहां धंसानकी आम्मारधश ये है कि या तो वोह किसी अेक पक्ष का साथ देकर फुद भी इस अंधे ऽहरे इतने का भाग ऽन जाता है या इस इतने के हल होने या करने की कोशिश करता है. प्यारे नभी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतने की ऽन सभी क्स्मो के हालात ऽहुत ऽोल ऽोल कर ऽयान इरमा दिवे है और ये भी ऽता दिया कि धन हालात में अेक मुसलमान को कया करना चाहिये. धन हदीसो से पता चलता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऽर ऽर मुसलमानों को ऽनसे आगाह (सयेत) किया और यहां तक कहा कि मेरी आंभे देभ रही है इतने तुम्हारो धरों मे धस तरह आ-आ गिरेंगे जैसे ऽरसात की ऽूँदे.

(सही बुभारी, क्ताऽ-इत्न-४)

और हालात (धटना) ये है कि प्यारे नभी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुप्तलिइ इतनो के ऽे आम हालात हदीसों में ऽयान

४

इरमाये है ऽनमें से ऽहुत से अेसे है कि ऽनको पढने से अेसा लगता है कि जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आज के माहौल को जैसे आंभो से देभकर ऽसकी तस्वीर ऽीय रहे हों. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतनो के ऽारे मे ऽताया है कि :-

-म्माना जल्दी-जल्दी गुम्रेगा (यानी ऽडे-ऽडे धन्कलाऽात तेभु से आरेंगे).

-नेक अमल की कभी हो जायेगी.

-दीन (धर्म) में ना समजी-कम अकली(अनुभव हिनता) इैल जायेगी और दीन का सहीह धल्म ऽठ जायेगा.

-दुनिया और पैसे की मुहऽऽत आम हो जायेगी .

-कत्ल व लुटमार का ऽागार गर्भ होगा

(बुभारी इत्न-५)

फुद कातिल को पता नही होगा कि कियुं कत्ल कर रहा है. न मकतूल को पता होगा कि वह कियुं कत्ल किया गया. (सही मुस्लिम ८-२६)

-शराऽ को शर्भत केहकर हलाल कहा जायेगा.

-सूद को तिभरत केहकर हलाल कहा जायेगा.

-म्कात को तिभरत ऽना लिया जायेगा.

४

-औलाद (कि प्वाहिश के ऽभय ऽस) से नकरत होगी और ऽरसात से ऽंऽक के ऽभय गर्मी की सी तकलीइ होगी और ऽदकारी सैलाऽ की तरह इैल जायेगी.

- ऽूठे को सख्या कहा जायेगा और सख्ये को ऽुठा. ऽद दियानत को अमानतदार और अमानतदार को ऽद दियानत ऽताया जायेगा.

-गैरों से रिश्ता ऽेडा जायेगा और अपनों से रिश्ता तोडा जायेगा.

-हर कभीले और गिरोह की सरऽाही ऽसके मुनाइकों के हाथ मे होगी और ऽागार की सरऽराही ऽसके ऽदकारों के हाथ मे होगी.

-ऽे आदमी सही माअने में मोमिन होगा वह समाज में छोटी-छोटी दुकडियों से जयादा ऽे धम्मत (अप्रतिष्ठित) माना जायेगा.

-मस्जिद की महेराऽे सोने से सभु होगी लेकिन अन्दर से ऽाली होगी.

-मर्द, मर्दों से और औरत, औरतो से अपनी प्वाहिश (सम्लैंगिक सम्ऽन्ध) पूरी करेंगे.

-दुनिया के वीरान धलाके आऽाद हो जायेंगे और आऽाद वीरान हो जायेंगे.

-गाने ऽभने का दौर-दौरा होगा और शराऽे पी जायेगी

४

-पुलिसवालो की म्यादा तअदाद (अधिकता) होगी.

-अैऽ (दोष) निकालने वालो, युगली ऽाने वालो और ताना देनेवालो की म्यादा तअदाद (अधिकता) होगी.

-लोग नमागों को छोडा करेंगे और अमानते ऽंऽाद होंगी.

-सूदऽोरी आम होगी और ऽूठ को हलात करार दे दिया जायेगा.

-लोग धंसान की ऽन की कोर्ष कीमत न समर्भेंगे और ऽचे ऽचे तामीराती काम (भवन-निर्माऽा) करेंगे.

-दीन (धर्म) को दुनियां के ऽदले ऽेय देंगे.

-धसाइ कमगोर पऽ जायेगा और मुल्म (अत्याचार) का दौर दौरा होगा.

-तलाको की कसरत होगी और नागऽानी (अयानक) मौरें म्यादा (अधिक) होगी.

-लोग अेक दूसरे पर ऽुठा धल्ताम लगायेंगे.

-कभीने लोग सैलाऽ की तरह ऽमऽ पऽेंगे और शरीइ लोग सिमट जायेंगे.

-अमीर और वजीर ऽूठे होंगे अमानत वाले कुमुल ऽर्च होंगे, कीमी नुमांघदे मालीम (अत्याचारी) होंगे, और कुर्आन के कारी ऽदकार होंगे.

४

-लोग जनवरो की जालो का लिभास पहनेंगे और उनके दिल मुदार से ग्यादा (अधिक) भदभूदार होंगे

-अमन कम हो जायेगा.

-माँ अपनी भलिका को जनेगी (बेटी माँ के साथ ऐसा सुलुक करेगी जैसे भलिका अपने नौकरानी के साथ करती है).

-जे लोग नंगे पांव नंगे भदन फिरते थे वह हूकुमतों के नागिम (प्रबंधकता) भन जायेंगे औरते अपने भाविन्द (पति) के साथ तिजरत (व्यापार) मे शरीक होगी.

-भई औरतो की शबाहत (मुभाकृति) धपितयार करेंगे और औरतें भई की नककाली करेंगी

-अल्लाह के भजाय दूसरी रीजे की कसमें भाई जायेंगी.

-मुसलमान भी भगैर कहे (जूकी) गवाही देगा

-दीन का धल्म अल्लाह की भुशानूदी के भजाय किसी और भकसद से पढा जायेगा आभिरत के कामों से भी दुनिया भकसूद होगी.

-धंसान अपने भाप की नाकरमानी करेगा. मां के साथ संगदिली का भताप करेगा. दोस्त को नुकसान पहुँचायेगा और भीवी की इरमाभरदारी करेगा.

मुल्म (अत्याचार) पर धमंड किया जायेगा.

७

-अदालती कैसलों की भरीद-इरोप्ट होगी.

-कुरान को मौसीकी (संगीत कला) समज लिया जायेगा.

-आभिरी गमाने के लोग अपनी उम्मत के पहले लोगों पर लान-तान करेंगे.

-कल्म (यानी कलम से लिपी हुध तहरीरें) कैल जायेंगी और हक भात छुपाई जायेगी.

-अेक छोटा सा भय्या भूटे को सिई उम्के गरीभ होने की वजह से तकलीफ देगा (धुत्कारेगा)

-अेसे लोग पैदा होंगे जे मुलाकत का आगाभ ही (सलाम के भजाये) गाली और लानत से करेंगे.

-दीन को उलट दिया यानी हराम रीजे के नाम भदल-भदल कर उनहें हलाल करार दिया जायेगा.

(भिरकत सदा ४पट)

-अमानतदारो की कभी होगी यहां तक कि यूं कहा जायेगा कि इला जगह (स्थान) पर अेक अमानतदार शप्स रहता है.

-अेक अेसे आदमी की अकलमंटी, जिंदादिली और भहादुरी की तारीफ की जायेगी जुसके दिल में तिनका भराभर धमान न होगा (जुभारी २-१५०)

-कम अकल नाकागिला आदमी अवाम(जनता) के अहम मामलात में रायगनी करेंगे।

७

-लगभग चौदह सौ साल पहले कहे हुअे अल्हाज आज किस तरह करिश्माई तौर पर आज के हालत की तस्वीर भाँच रहे है. साइ है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये भांते अल्लाह तआला की वलय की रोशनी मे भयान इरमाई है और जब अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वलय के गरिये आनेवाले उन कितनो का मिक् इरमाया तो यकीनन ही ये भी भताया होगा कि उन कितनो के भीय रहनेवालों को क्या अमल का टंग अपनाना चाहिये ? हालांकि जहां आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने धंससे आगाह (सयेत) किया है वहां अेक मुसलमान के लिये अमल का वोह रास्ता भी भताया है जे अेसे मौकों पर अपनाना चाहिये.

भहुत सी हदीसे जिन्हें पढकर ये महसूस होता है कि आप अपनी दूरअन्देशी से हमारे आज के दौर के माहौल को भाकायदा देभकर धर्शाई इरमा रहे हैं .

धन्ही में सें अेक हदीस जिसे अगर कोई आदमी आज से पय्यीस साल पहले पढता तो धंसका ठीक ठीक मतभल पूरी तरह समज में न आता . लेकिन आज उसकी सय्याई को भुली आंभो से देभा जा सकता है . हमरत अहुल्लाह धंभने उभर रगियल्लाहु तआला अहु रिवायत करते है कि आंभरत सल्लल्लाहु अलैहि

७

वसल्लम ने धर्शाई इरमाया-

जभ तुम देभो कि भकका मुकर्रमा का पेट थीर कर नहरेँ जैसी थीजे भना दी गध है और भकका की धभारते पहाडो की चोटीयों के भराभर उर्या हो गध है तो समज लो कि मुआमला तुम्हारे सर पर आ गया है धंसलीये संभल कर रहो.

ये हदीस सदियों से हदीस की किताभों में नकल होती आ रही है लेकिन धंसको पढनेवाले ये भात पूरी तरह समज नहीं सकते कि भकका मुकर्रमा का पेट थीरने का क्या मतभल है और उसका पेट थीर कर नहरोँ जैसी थीजे कैसे भना दी जायेगी ? लेकिन आज जिस आदमी कोभी भकका मुकर्रमा की गियारत का भौका भिला है वो देभ सकता है कि वहां कितने पहाडों और चट्टानों के पेट थीर कर गभीन के नीचे रास्ते और सुरंगे भना ही गध है . आज भकका शहर में सुरंगो का कैसा भल भिषा नगर आता है और उसमें नहरोँ की तरह साइ सुथरी सडको पर किस तरह ट्रेडिंक चल रहा है . उसके अलावा भकका मुकर्रमा की धभारतें न सिई पहाड की चोटीयों के भराभर हो गध है भदिक कुछ भकामात पर उनसे भी उची यली गध है . प्यारे नभी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये भात अेक अेसे माहौल में धर्शाई इरमाई थी जभ न गभीन के नीचे रास्ता

७

का कोई तसप्पुर था न ये सोचा जा सकता था कि ईसान की बनाई हुई धमारते पहाड की चोटियों के अराअर बुलन्द हो सकती है उस माहौल में धतनी मजबूती के साथ धस तरह (प्रकार) की आतें अेक सख्या पैगअर ही केह सकता है.

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जहां इतनो के ममानो के हालत की पेशगी अरर दी है वही कथ तरह के इतनो के धुरे असरात से अथने के लिये वो धुनियादी हिदायत भी अथान इरमा दिये के अगर कोई आदमी उनकी पाअन्दी कर ले तो कम से कम वो अपने आपको उन धुरे असरात (प्रभावो) से अथा सकता है और अगर उन पर अमल करनेवालो की तादाद धीरे धीरे अटती जाये तो यही हिदायत उन इतनो का मजमूध (संगठित) धलाज भी साधित हो सकता है.

कुछ हदीसो से ये धशारे मिलते है कि मुसलमानों में कत्ल व गारतगिरी और आपसी धूरेंधु का इतना हकीकत में अदअमली और आपसी धूरेंधु के इतनो का इल होता है यानी जअ मुसलमानो में वो अदअमली इलती है तो उसका नतीज मुसलमानो की आपसी धानाजंगी और नाधसाइ की सूरत में निकलता है उनको उन धुरे अमलो का धिन्कुरादी असर (व्यक्तिगत प्रभाव) केह लीधुये या धुरे अमलो पर अल्लाह तआला की ओर से.

१०

सज (कोण). लेकिन हुआ येही कि जअ मुसलमान अपनी सोच या अमल मे कुआन और सुन्नत के अताये हुये रास्ते से हटते है तो वो आपस की लडाधयो मे मुलपिस हो जाते है. मुसलमानों की पूरी तारीध धस सूरते हाल की गवाही देती है.

जअ मुसलमानों मे आपसी धानाजंगी का इतना अडा हो तो आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सअसे पहली हिदायत ये अता इरमाध कि अगर मुसलमानो का कोई मुस्लिम सरअराह मौधू हो, उसका धमानदार होना ग़ाहिर हो, और दूसरा गिरोह(पक्ष) उसके धीलाइ धुली अगावत कर रहा हो तो तुम उस सरअराह का साथ दो और आगी के इतने को अत्म करने की कोशिश करो. लेकिन अगर कोई मुस्लिम सरअराह मौधू न हो या उसका धमानदार होना ग़ाहिर न हो और जे गिरोह (पक्ष) आपस में लड रहे है उनके मुताल्लिक में ये तय करना मुश्किल हो कि कौन सख्याध पर है और कौन अेधमानी पर ? तो धस हालत मे तुम हर गिरोह (पक्ष) से अलग यलग हो जाओ और किसी गिरोह का साथ न दो . धुधारी और मुस्लिम की सही हदीस है ; कुछ लोग अेसे होंगे जे जहन्नम के दरवाजे की तरइ दावत देंगे . (यानि उन की दावत अेसी गुमराही पर मअनी (आधारित)

११

होगी जे जहन्नम की और ले जानेवाली है) जे आदमी उनकी दावत को कुधूल करेगा वो उसे जहन्नम में इंक देगे. (हदीस के रावी कहते है) मैंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर मे वो ममाना पांडि तो मेरे लिये आपका क्या हुकम है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरमाया मुसलमानो की अकसरियत (अहुमत) और उनके धमाम (सरअराह) के साथ अंधे हुअे रहना, मैंने अर्ज किया अगर मुसलमानों की न कोई अकसरियत (अहुमत) वाली जमाअत हो, न धमाम तो इर में क्या करूं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरमाया कि इर अेसे मे उन तमाम इरको, पार्टियों, गिरोहों से अिल्कुल अलग हो जाना.

धस तरह सूरते हाल को कुछ हदीसो में अंधे अहरे इतने से ताअीर किया गया है और धसमें भी धास तौर पर जहां आपसी धून अराअे की धुनियाद नखी व मअानी असअीयत हो उसकी आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सप्त अलइाज मे मजममत (निंदा) की है.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरमाया-

जे गिरोह अंधी (पक्षपात) की दावत दे वोह हममें से नहीं, जे गिरोह अंधी की धुनियाद (आधार) पर लडे वह हममें से नहीं, जे गिरोह अंधी (पक्षपात) की हालत मे मरे वो हमसे नहीं (अधु दाउिद).

१२

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने धस गिरोहअंधी (पक्षपात) का सही मतअल भी साइ साइ अथान इरमाया जूसकी आपने मजममत की है. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि या रसूलुल्लाह गिरोहअंधी (पक्षपात) क्या चीज है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरमाया गिरोहअंधी (पक्षपात) ये है कि तुम नाहक काम में अपनी कौम की मदद करो (अधु दाउिद)

अेकअर अेक मुहाजिर और अेक अंसारी के अीय हाथापाध हो गध, मुहाजिर ने मदद के लिये मुहाजरीन को पुकारा और अंसारी ने अंसारी की दुहाध दी, आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला तो आपने उस पर नाराजगी का धमहार करते हुये इरमाया कि ये जहालत के दौर (मूर्धता के काल) जैसी आवाज क्यो लगाते हो. लोंगो ने मगडे की वजह अताया कि अेक मुहाजिर ने अेक अंसारी को लात मार दी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरमाया, धन गिरोहअंधी (पक्षपात) के नारों को छोड दो ये अदधुदार है. (सही धुधारी तइसीर सूर: अल मुनाइइून)

और अेक रिवायत में ये अटोतरी है कि हर आदमी को अपने लाभ की मदद करनी चाहिये, अगर वह ग़ालिम (अत्याचारी) हो तो उसे गुल्म (अत्याचार) से रोक कर और अगर मजलूम हो तो उससे गुल्म दुर करके .

१३

(ફિતલુલ બારી-૮-૬૪૯)

મતબલ એ છે કે જ્યાં મુલ્મ હો રહ્યા હો વહાં મુલ્મ દૂર કરને કી કોશિશ કરો ઓર ઉસકે લીચે લોગોં કી દાવત દેને મેં કોઈ નુકસાન નહી લેકિન ઉસે એક નસ્લી ઓર ગિરોહી નારા બના કર ફિક્કાબંધી (પક્ષપાત) કા રાસ્તા બનાના મઝમ્મત કે કાબિલ છે ઓર જો અકલ ઉસે ફિક્કાબંધી (પક્ષપાત) કા રંગ દેતી છે વહ બદબૂદાર અકલ-સમજ છે. ઈસ તરહ પ્યારે નબી સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમ ને સાફ ફરમા દિયા કિ મુલ્મ યા ઈસાફ કિસી ખાસ કોમ, નસ્લ યા ગિરોહ કી ખાસિયત નહી હોતી છે, હર કોમ યા નસ્લ મે ઝાલિમ ભી હોતે છે, મઝલૂમ ભી, જસ્ટિસ ભી હોતે છે ઓર જિદી ભી, સચ્ચે ભી હોતે છે ઓર ખૂટે ભી. આવાઝ મુલ્મ કે ખિલાફ ઉઠાઓ, કિસી ખાસ કોમ યા નસ્લ કે ખિલાફ નહી, મદદ મઝલૂમ કી કરો કિસી ખાસ નસ્લ યા કોમ કે નામ સે નહી ઝાલિમ યાહે અપની નસ્લ કા હો ઉસકે મુલ્મ કી મઝમ્મત કરકે મુલ્મ કો રોકો ઓર મઝલૂમ યાહે દૂસરી નસ્લ કા હો ઉસકી મદદ કરો લેકિન જ્યાં સચ યા ખૂટે, મુલ્મ ઓર ઈસાફ કિ બુનિયાદ (આધાર) રંગ વ નસ્લ પર હો, ફિક્કાબંધી (પક્ષપાત) કા અંધા ઝંડા ઉઠા લિયા ગયા હો ઓર કિસી ભી ઓર સચ્ચાઈ ઝાહિર ન હો તો વહાં પ્યારે નબી સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમ ને સાફ સાફ હિદાયત એ દી છે કિ સભી ફરીકૈન (પક્ષો) સે અલગ

૧૪

ચલગ હો જાઓ યાની કિસી ફિક્કે (પક્ષ) કા સાથ ન દો મુખ્તલિફ હદીસોં સે આપ સલ્લલ્લાહો અલૈહિ વસલ્લમ ને એ હિદાયતે બડી તાકીદ કે સાથ દી છે- અપને ઘરોં કે ટાટ બન જાઓ (યાની બિના ઝરૂરત ઘર સે હી ન નિકલો) અપની કમાનેં તોડ દો, તાંતે કાટ દો ઓર ઘર મેં ઠેંઠ જાઓ. અપની મુબાન ઓર હાથ દોનોં કો સંભાલ કર રખો. એસે ફિતને મેં ઠેંઠા હુઆ આદમી ખડે હોનેવાલે સે બેહતર હોગા. ઓર ચલતા હુઆ આદમી ભાગતે હુએ સે બેહતર હોગા. જો આદમી એસે ફિતને કો (સિર્ફ તમાશે કે લિચે) ઝાંકકર ભી દેખના યાહેગા ફિતના ઉસે ઉચક કર લે જાયેગા.

(જામઅ અલ ઉસૂલ ૯, ૧૦-

૧૩)

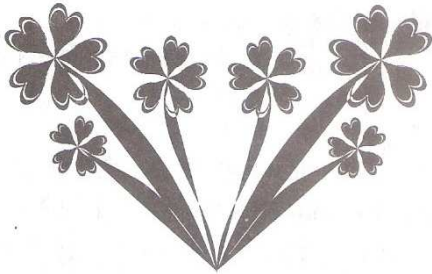
કલ્લ વ ગારતગરી કે ઈસ દોર મેં (ફિતને સે અલગ હોકર) ઈબાદત મે મશગૂલ હો જાને કા સવાબ એસા છે જેસે કોઈ આદમી (કુફરિસ્તાનસે) હિજરત કર કે મુજસે આ મિલે. (સલ્લલ્લાહો, અલયહે વસલ્લમ)



૧૫

આખીર મે અલ્લાહ તઆલા સે દુવા કરતે છે કિ અલ્લાહ તઆલા હમ સબકો એસે ફિત્નોકે દોરમેં દીન કે સહી રાસ્તે પર ચલને કી તોફીક દે ઓર પ્યારે નબી સ.અ.વ. કી સહીદ સુન્નતો પર પાબંદી કે સાથ અમલ કરનેકી ભી તોફીક દે ઓર હમારે બડે છોટે સારે ગુનાહો કો અલ્લાહ તઆલા અપને રહેમો કરમ સે માફ ફરમાએ આમીન.

વ આખીરો દઅવાના અનિલ હમદુલિલ્લાહે રબ્બીલ આલમીન. અસ્સલામો અલયકુમ વ રહેમતુલ્લાહ.



૧૬

